- प्रथम अध्याय -

नरेन्द्र कोहली : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1. नरेन्द्र कोहली : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

नरेन्द्र कोहली आज के युग के जानेमाने कथाकार, नाटककार, निबंधकार, व्यंग्यकार और साहित्य के गंभीर अध्येता हैं। आप भारतीय अस्मिता और संस्कृति से गहरा लगाव रखनेवाले आधुनिक लेखक हैं। आप का साहित्य-विषयक उददेश्य स्पष्ट है। आप का व्यंग्यकार, कथाकार रूप अपनी पूरी ताकत के साथ पाठकों के सामने आया हुआ हैं। आप के पास चुस्त भाषा और वर्णन की सरस शैली है, जिसकी वजह से आप कथ्य के उद्देश्य के अनुरूप बहुत अच्छे और सोद्देश्य पूर्ण संवादों की रचना कर सकते हैं, जो किसी भी नाटककार की संपत्ति हैं। इसी कारण आप स्वातंत्र्योत्तर काल के महत्वपूर्ण साहित्यकार माने जाते हैं।

कोहली जी की गतिविधि जानने के लिए आवश्यक है कि उनके जीवन से परिचित हुआ जाय, क्योंकि "जीवन और साहित्य" का अभिन्न संबंध हैं। आप कितने ही तटस्थ क्यों न हो, फिर भी आपके साहित्य में जीवन के कुछ न कुछ अंश आ ही गए हैं। साहित्यकार का व्यक्तित्व उसके साहित्य में निहित होता है, इसलिए उसके साहित्य के मूल में पहुँचने के लिए पहले उसके जीवन में पहुँचने की आवश्यकता होती हैं।

नरेन्द्र कोहली ने एक मनुष्य के रूप में अपनी पारिवारिक स्थितियों से अपने शैशवकाल में प्रभाव ग्रहण किया हैं। लेखक की माँ, उसके पिता, भाई-बहन, दादा-परदादा आदि सम्बन्धियों के माध्यम से वह अपनी सामाजिकता को आत्मगत करते हुए सामाजिक वातावरण में अपने आप को अनुकूल बनाने की कोशिश करता हैं। कोहली आजीवन सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति करनेवाले यथार्थवादी परम्परा के कथाकार हैं।

कोहली ने व्यक्तिगत जीवन में जो देखा, सुना, भुगता, अनुभव किया उसे अपने लेखन का अंग बनाया। शोध और व्यंग्य के क्षेत्र में कोहली का स्थान सर्वप्रथम हैं। आप की कहानियां आधुनिक युग की मांग हैं। साठोत्तरी पीढ़ी के सुपरिचित लेखक के रूप में आप उभरकर सामने आते हैं।

I.) बचपन :

श्री नरेन्द्र कोहली का जन्म 6 जनवरी 1940 ई. को स्थालकोट में प्रातः साढ़े नौ बजे हुआ था। जिस घर में आपका जन्म हुआ वह आप के दादा का घर था। दादा पंजाब के वन-विभाग में हेड क्लर्क थे और इसी पद से वे रिटायर हुए थे। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी। नरेन्द्र जी को होश संभलने पर जो तथ्य ज्ञात हुआ उसके अनुसार पैतृक मकान का उनका हिस्सा उनके बड़े भाई ने हड़प लिया था। उस हिस्से को लेकर भाईयों में जो झगड़ा हुआ था वह उनके जीवन के अन्त तक चला। लेखक के दादा के देहांत पर भी उनके बड़े भाई नहीं आये थे।

कोहली जी के दादा ने अपनी वैध-अवैध कमाई के आधार पद दो मकान बनवाये थे। "एक मकान "ट्रंका वाले बाजार" के "मुहल्ला डिप्टी का बाग" में था - जो पुराने किस्म का मकान था और किराये पर चढ़ा हुआ था। दूसरा मकान "मुहल्ला वाटर वर्क्स" में एक्ट रोड पर था। यह नये क्षेत्र में खुला हवादार मकान था।"[1] इसमें उनके दादा स्वयं रहते थे। उनकी दो पत्नियाँ थी। दादा की बड़ी पत्नी लेखक की सगी दादी - अपने पति से अलग, चाचाजी के पास जमशेदपुर में रहती थी। दादा उनकी दूसरी पत्नी के साथ अपने इस मकान में रहते थे। "दादा का नाम हरकिशनदास और दादी का नाम भाइयाँ देई था। सौतेली दादी का नाम दुर्गादेवी था। दादा मैट्रिक पास थे। वे उर्दू और अंग्रेजी जानते थे। दोनों दादियां निरक्षर थी।"[2]

कोहली जी का शैशव कभी भी नटखट और खिलंडरे बच्चों का शैशव नहीं था। आरम्भ में वे काफी बीमार और रोना बच्चा थें। शरीर पर फोड़े-फुंसियां भी बहुत थी। आप बचपन में अधिकांशतः अपने माँ से ही चिपका रहते थे। शक्ति की कमी थी लेकिन ऊर्जा की कमी नहीं थी, क्योंकि आप अपने ढंग से सदा ही अधिक काम करनेवाले प्रसिध्द थे। या शायद ऊर्जा अधिक नहीं थी, पर जो थी उसे आपने बिखरने नहीं दिया।

लेखक को अपना बचपन लाहौर से याद आता है। आप दिल्ली के पुराने शाहदरा जैसे किसी मुहल्ले में "भगतां दा चौक" के पास हरनामसिंह के मकान में किरायेदार थे। एक कमरा और रसोई नीचे की मंजिल पर थे और एक कमरा और शौचालय पहली मंजिल पर था। जब किराया बढ़ाने की बात हुयी तो उनके पिताजी ने कमरा छोड़ दिया। गली में नालियों की उचित व्यवस्था नहीं थी। घर के बाहर गंदा पानी जमा करने के लिए एक गढ़ा था। पानी इतना ही बहना चाहिए था जितना उस गढ़े में समा सकें। पानी अधिक हुआ तो किचड़ हो जाती। इसलिए मकान मालिक ने आपके माँ और पिताजी को हिदायत दी कि, आप पानी अधिक न बहायें। आपके माँ और पिताजी

कम से कम पानी में नहाते थे। लेखक को और उनके बड़े भाई भूषण को दूसरे मुहल्ले में अपनी एक भुआ के घर नहाने जाना पड़ता था। वहाँ नालियों का प्रबन्ध था। नरेन्द्र जी को बचपन में अपने माता-पिता से इच्छा-शक्ति एवं नैतिकता मिली थी। उनके प्रेरणा से आपको जिन्दगी में कुछ कर गुजरने की शक्ति मिली।

2) माता-पिता :

"आपकी माता का नाम विदयावंती था। वह निरक्षर थी। वह स्यालकोट के पास के ही एक गाँव "कौलोकी" के कृषक परिवार की कन्या थी। "कौलोकी" में न स्कूल था, न डाकघर, न अस्पताल, न ही कुछ और, इसके कारण वह सर्वथा निरक्षर थी और हैं।"[3]

आपके पिता का नाम परमानन्द कोहली था। उनकी आँखों में बचपन से कुकरे थे। दृष्टि दोषपूर्ण होने के कारण वे सातवी-आठवी से आगे नहीं पढ़ सके थे। आपके दादा ने उन्हें स्यालकोट में पुस्तकों और पत्रिकाओं की एक दुकान खोल दी थी। किंतु वे दुकानदार नहीं, बल्कि साहित्यकार बनना चाहते थें। उन्होंने दो-एक कहानियां भी लिखी थी, जो किसी दैनिक समाचारपत्र में प्रकाशित हुई थी, किंतु न वे साहित्यकार बन सके और न दुकानदार। अंग्रेजों के विरूध्द किये गये किसी प्रदर्शन में वे पकड़े गये। दादा ने उन्हें जमानत पर न केवल छुडाया, वरन् अपने अंग्रेज अधिकारी से कहकर उन्हें अपने ही विभाग में अस्थायी क्लर्क की नौकरी भी दिलवा दी। समुचित रूप से शिक्षित न होने और अपने दृष्टिदोष के कारण, उनकी नौकरी न कभी पक्की हो सकी, न उनकी पदोन्नति हुई, दूसरी ओर वे अपने परिश्रम और अंग्रेज अधिकारी की कृपा के कारण वे नौकरी से निकाले भी नहीं जा सके। जहाँ थे, त्रिशंकु के समान वहीं टंगे रहें।

सन छियालीस के आसपास ही आपके पिताजी की आँखों की दशा शायद कुछ अधिक बिगड गई थी। डाक्टरी जाँच में वे सरकारी दफतर में कार्य करने के सर्वथा अयोग्य पाये गये थे। अतः उन्हें प्रायः पच्चीसेक वर्ष की अस्थायी नौकरी से मुक्त कर दिया गया। और कोई चारा न होने के कारण वे स्यालकोट में आ गये। आपके दादा का भी देहांत हो चुका था। पुराना मकान पिताजी और चाचाजी की संयुक्त संपत्ति था और नया मकान दादा अपनी छोटी पत्नी के नाम कर गये थें। दूसरे मंजिल पर पिताजी ने अपने लिए एक कमरा और रसोई किसी प्रकार खाली करा लिये और वही पर अपना ड़ेरा बसा लिया। नीचे की मंजिल का आगे का कमरा कुछ हवादार था। उसी में उन्होंने आपके माँ के गहनों की पुंजी के आधार पर, खेल के सामान की दुकान खोली। "आपके पिताजी ने देश के विभाजन के पश्चात् जमशेदपुर में कदमा बाजार में पटरी पर फलों की दुकान लगानी शुरू

की। सुदर्शन दिन में पिताजी के साथ दुकान लगाते और रात को नाइट स्कूल में पढ़ते। माँ घर काम करती।'[4] आपके पिता का 1985 ई. में बयासी वर्ष की अवस्था में आँखों की बिमारी के कारण देहांत हुआ।

3) शिक्षा :

आपकी शिक्षा का आरंभ छह वर्ष की आयु में देवसमाज हाईस्कूल, लाहौर में हुआ। उस समय बच्चे बाजे-गाजे के साथ स्कूल भेजे जाते थे, पर आप उतने समर्थ नही थे। आपके पिताजी आपको अपने साथ ले गये थें। रास्ते में कही से सवा रूपये के लड्डू खरीद लिये थे। लड्डू मास्टर रूड़सिंह के हवाले कर आपको कक्षा में बैठा दिया गया था। उस समय लाहौर में शिक्षा का माध्यम उर्दू ही था। उस समय उन्हें आश्चर्य हुआ था कि, बाहर लोग पंजाबी बोलते हैं और कक्षा में घुसते ही उर्दू पर क्यों उतर आते हैं। लाहौर छोड़ने पर स्यालकोट में गंडासिंह हाईस्कूल में कुछ समय तक शिक्षा ग्रहण की। देश के विभाजन के पश्चात् जमशेदपुर चले आए। तीसरी कक्षा की पढ़ाई 'धतकिडीटट लोअर प्राइमरी स्कूल' में की थी। यह स्कूल लड़कियों का था, पर शायद लड़कियों की संख्या बहुत कम थी, इसलिए लड़के भी ले लिये जाते थे। आपके पास 'स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट' नही था, इसलिए उनकी दूसरी कक्षा की परीक्षा ली गई। आपके साथ कुछ लड़के भी थे। आप सब के सब उस परीक्षा में फेल हो गए। किंतु आपके अंक सक से अधिक थे, इसलिए आपको तीसरी कक्षा में ले लिया गया। 'कक्षा में आने पर दो अध्यापिकाएँ उन्हें बाहर मैदान में ले गई। एकांत में उन्होंने पूछा, 'तुम हिंदू हो?' 'हाँ।' उन्होंने उत्तर दिया। 'तो फिर उर्दू क्यों पढ़ते हो?' 'हम तो उर्दू ही पढ़ते हैं।'[5] आपका उत्तर था। शायद उनके जीवन में पहली बार एक हिन्दू लड़का उर्दू की कक्षा में आया था। तीसरी कक्षा की परीक्षा में उनका द्वितीय स्थान था। प्रथम स्थान उस लड़के का था, जो उनकी क्लास टीचर के पति से टयूशन पढ़ता था। उनकी चौथी से सातवीं कक्षा (1949-53) तक की शिक्षा 'न्यू मिडिल इंग्लिश स्कूल' में हुई, किन्तु अंग्रेजी का मात्र अक्षरज्ञान ही हुआ। शेष सारी शिक्षा उर्दू के माध्यम से प्राप्त की। 'आठवी से ग्यारहवी (1953-57) तक की पढ़ाई मिसेज 'के.एम.पी' हाईस्कूल में हुई। हाईस्कूल में विज्ञान संबंधी विषयों का अध्ययन किया। अब तक की सारी शिक्षा का माध्यम उर्दू भाषा ही थी।'[6]

आपने उच्च शिक्षा के लिए जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज में प्रवेश लिया। विषय थे अनिवार्य हिन्दी तथा अंग्रेजी के साथ मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र तथा विशिष्ट हिन्दी आई.ए. की परीक्षा बिहार विश्वविद्यालय (1959) से दी। बी.ए. ऑनर्स के लिए अनिवार्य विषय अंग्रेजी के साथ हिन्दी साहित्य तथा दर्शनशास्त्र का चुनाव किया। 1961 ई. में राँची विश्वविद्यालय से संबध्द जमशेदपुर

को-ऑपरेटिव कॉलेज से बी.ए. ऑनर्स कर एम.ए. करने के लिए दिल्ली चले गए। 1963 ई. में दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस कॉलेज से सबध्द होकर हिन्दी में एम.ए. किया। इसी विश्वविद्यालय से 1970 ई. में पी-एच्.डी. की उपाधि प्राप्त की।

4) आजीविका :

"आपने पहली नौकरी दिल्ली के "पी.जी.डी.ए.वी. (सांध्य) कॉलेज" में हिन्दी के अध्यापक के रूप में 1963 ई. से 1965 ई. तक की। दूसरी नौकरी "मोतीलाल नेहरू कॉलेज, नई दिल्ली" में 1965 ई. में आरंभ की थी, जो अब तक चल रही है।"[7]

5) विवाह :

आप जब दिल्ली में आए तो स्थिति उतनी खराब नहीं थी पर हालत खराब हुई प्रेम को लेकर। मैत्रियाँ तो अनेक लोगों से थी, पर एक अदद प्रेम भी हो गया था। आपका एक तरफा प्रेम में विश्वास नहीं था, अतः आपने उस लड़की से पूछ लिया। उसने सहमति दे दी। बस, फिर क्या था, उन्हें चारो ओर प्यार ही प्यार नजर आ रहा था। प्रेम करना आता नहीं था और प्रेम कर रहे थे। अर्थात भीड़ में ही बात करने का बहाना ढूंढ रहे थें। दिन-भर में पाँच-सात मिनट बात हो गई तो प्रसन्न, नहीं तो बौराये-बौराये फिरते थे।

एम.ए. की परीक्षा होने के बाद आप जमशेदपुर जा रहे थे। जाने से पहले उसका इरादा क्या है जानना चाहा। उसने स्पष्ट शब्दों में कहा कि, उसके घरवाले यह संबंध स्वीकार नहीं करेंगे। यह वाक्य आपके लिए तनिक भी अनपेक्षित नहीं था। "अपने देश में तो घरवालों का काम ही है.... प्रेम के मामले में टाँग अड़ाना। आप हतोत्साहित नहीं हुए। घरवालों की बात छोड़ो, उन्होंने कहा, "तुम अपनी बात करो।" "क्या" उसने पूछा। "मै तुमसे प्रेम करता हूँ, क्या तुम भी मुझसे प्रेम करती हो?" आपने उसे विस्तार से समझाया कि उसके घरवालों को मनाना अपना काम है। उनके लिए बड़ी पीड़ा तो यह थी, जब वे यह जानेंगे कि, वह उनसे प्रेम नहीं करती थी और वे व्यर्थ ही प्रवंचित होते रहें।"[8]

लेखक इस बात से द्वन्द्व में नहीं रहना चाहते थे। वे सिर्फ हा या ना में जवाब चाहते थे। अंत में आप ही जान गए कि वह शादी के लिए तैयार नहीं। आप उसे कहते हैं - "हमारा संबंध आज से समाप्त हुआ।" आपने उसका चित्र भी उसे वापस दिया। पर उसने आपके पत्र कभी भी नहीं लौटाये।"[9]

आपने महसूस किया कि, अपने जीवन से नारी तत्व जैसे निकल ही गया है। असफल प्रेम की परेशानी उन्हें सता रही थी। जीवन इतना उदास और वीरान कभी नहीं था। इसके कारण पढ़ना लिखना असंभव हो गया। मधुरिमा से उनकी पहले ही जानपहचान थी। वह एम.ए. प्रीवियस में थी और आप फाइनल में थे। दोनों की कक्षायें लगे हुए कमरों में होती थी। वह असाधारण सुन्दरी तो नहीं थी, पर दृष्टि उसके चहेरे पर पडती थी तो रूकती थी। पढ़ने में होशियार थी। कभी कभार पढ़ाई की कोई बात हो जाती थी तो कभी शरारत भी होती। आपके मन में उनके लिए प्रबल आकर्षण जाग उठा। उनका मिलना-जुलना बढ़ा। एक-दूसरे को समझा, निकट आये और साहचर्य में सहज प्रेम विकसित हुआ। मधुरिमा मॉडर्न कालेज में असिस्टेंट लैक्चरर हो गई। और आप अध्यापन के दो वर्ष पूरे कर लैक्चरर हो गए थे। मधुरिमा के कॉलेज का नाम "कमला नेहरू कॉलेज" हो चुका है।

9 अक्तुबर 1965 ई. को मधुरिमा जी से आपका विवाह हुआ। विवाहोपरांत आरंभिक झगड़े और मतभेद होते रहे, पर उन्होंने कभी कोई गंभीर मोड़ नहीं लिया। 1966 में आपको पहली बच्ची हुई और चार माहिनों के पश्चात उसका देहांत हो गया। दिसंबर 1967 ई. में जुड़वा संतानों - कार्तिकेय और सुरभि का जन्म हुआ। "सुरभि केवल 24 दिनों की आयु लेकर आयी। कार्तिकेय अब अर्थशास्त्र में एम.ए. कर "दिल्ली विश्वविद्यालय" के एक कॉलेज में लैक्चरर है। 1975 ई. में अगस्त्य का जन्म हुआ। वह बारहवी कक्षा में पढ़ रहा है।"[10]

6) प्रथम रचना :

आपकी बहन जी कॉलेज में पहुंच गई थी और हिन्दी साहित्य पढ़ रही थी। "तुलसी, पद्माकर, रत्नाकर, जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी की पंक्तियाँ वे अक्सर पढ़कर सुनाती थी और शायद उनके इसी प्रभाव में आप ने निर्णय लिया कि मैट्रिक के बाद न तो उर्दू पढेंगे, न विज्ञान।" आपकी रूचि तो हिन्दी साहित्य की ओर बढ़ गयी। आप न तो बैरिस्टर बनना चाहते थे, न आई.ए.एस. अफसर, न इंजिनियर न डाक्टर। आप तो लेखक बनना चाहते थे और वही किया। आपकी लिखने और छपवाने की इच्छा बचपन से ही थी। छठी कक्षा से कक्षा-पत्रिका में रचनाएँ प्रकाशित होने लगी। आटवी कक्षा में स्कूल की पत्रिका में एक कहानी "हिन्दोस्तां : जन्नत निशां" उर्दू में छपी। हाईस्कूल के ही दिनों में हिन्दी में लिखना आरंभ हुआ।"[12] "किशोर" (पटना) "आवाज" (धनबाद) इत्यादि में कुछ आरंभिक रचनाएँ बाल-लेखक के रूप में छपी। आई.ए. की पढ़ाई के दिनों में एक कहानी "पानी का जग, गिलास, केतली", "सरिता" (नई दिल्ली) के "नये

अंकुर" स्तंभ में प्रकाशित हुई थी। नियमित प्रकाशन का क्रम फरवरी 1960 ई. से आरंभ हुआ, इसलिए सामान्यतः प्रथम प्रकाशित रचना "दो हाथ" ("कहानी", फरवरी 1960) मानी जाती है।

7) **जीवन संघर्ष :**

आपकी पहली बच्ची 1966 में हुई और चार महिनों के पश्चात् उसका देहांत हो गया। "उन्ही अनुभवों पर "किरचे", "दूसरी आया" और "साथ सहा गया दुख" इत्यादि रचनाये लिखी गई। "दि कॉलेज" भी उन्ही दिनों की उपज हैं। प्रेम, नौकरी, विवाह, संतान का जन्म, संतान की मृत्यु इत्यादि अनुभवों ने जीवन को देखने की दृष्टि को काफी प्रौढ़ किया था। व्यंग्यात्मक दृष्टि का थोड़ा बहुत विकास इन्ही दिनों में ही हुआ था।"[13]

1967 के गर्मी की छुट्टियों में आपने मकान बदल लिया था। "एस-362 ग्रेटर कैलाश - 1, नई दिल्ली - 48 में आ गये थे। 30 नवम्बर 1966 को पहली बेटी संचिता का देहांत "होली फैमिली" अस्पताल में हुआ था। उसके ठीक एक वर्ष बाद, ठीक उसी दिन मधुरिमा के कोख से जुडवाँ बच्चों ने जन्म लिया।"[14] एक लड़का और एक लड़की थी। दोनों स्वस्थ थे, मधुरिमा भी स्वस्थ-प्रसन्न थी। पाँच दिन बहुत उत्साह में बीत गए। वैसे तो जुड़वाँ को पालना कष्टदायक तो है, पर अनुभव बड़ा रोचक था। पर छठे दिन दोनों को पोलियो हो गया। अस्पताल में इलाज चल रहा। दिन भर अस्पताल में ही टंगे रहते थे। रोज दवाएँ बदलती, डॉक्टर रोज तसल्ली देते, पर कोई लाभ नहीं हुआ। उन दिनों लेखक ज्योतिषियों और तांत्रिकों के पास भी बहुत दौड़े, लेकिन कुछ फायदा नहीं हुआ। 24 दिसम्बर 1967 को दोनों बच्चों को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में दाखिल करवाया गया। किंतु लड़की का उसी शाम देहांत हो गया। चालीस दिन का होकर लड़का पहली बार घर आया। जुड़वाँ बच्चों के नाम आपने सुरभि और सौरभ सोचे थे, पर अब लड़के का नाम कार्तिकेय रखा। वह भी सालभर काफी बिमार रहा और ये दिन आपके लिए शारीरिक और मानसिक दृष्टि से बहुत ही कष्टप्रद थे। "एलोपैथिक, होम्योपैथिक, डॉक्टर, ज्योतिषी, तांत्रिक और घर पर आपका रामचरितमानस का नित्य पाठ - सब कुछ चलता रहा। इन परेशानियों में शोध-कार्य जाने कहाँ छूट गया, पर व्यंग्य का विकास हुआ। अधिकांश व्यंग्य रचनाये इन्हीं दिनों लिखी गई। आपने अथक परिश्रम से परिस्थितियों का डटकर मुकाबिला किया।"[15]

कठीन से कठीन स्थिति में भी आपने अपना पथ प्रशस्त किया और तमाम चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी मंजिल की ओर वे निरन्तर अग्रसर रहे, यही उनकी श्रम-साधना की सक्षमता है और शक्तिमत्ता भी हैं।

8) व्यक्तित्व :

नरेन्द्र जी के व्यक्तित्व के अनेकानेक पहलू है। बिना उन सब को जाने उनका व्यक्तित्व अधूरा रह जाता हैं।

आपका चरित्र एक खुली हुई किताब है। बहुत देर तक गम्भीर बैठे रहना आपके लिए दुष्कर हैं। बाते करने में आप बहुत स्पष्टवादी हैं। स्पष्टवादिता के कारण शत्रु-मित्रों की संख्या बढ़ा दी हैं। आप जिददी और क्रोधी भी कम नहीं हैं। जीवन से लेकर साहित्यिक क्षेत्र तक आपका यह रूप देखने को मिलेगा। आपका प्रकृतिप्रेम बहुत ही गहरा एवं अनुपम हैं। आपके साहित्य पर इसकी छाया स्पष्ट रूप से अच्छादित है। आप स्वयं महत्वाकांक्षी और घोर आत्मविश्वासी व्यक्ति हैं। आप स्वाभिमानी है। अनाचारों के खिलाफ लड़ना, अधिकारों के लिए सदैव झगड़ना, गलत कार्य न करना, गलत आरोपों को न सहना आपके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। रोजी-रोटी या पैसे के कारण आपने कभी भी अपने स्वाभिमान को नत नहीं होने दिया। कोहली जी में जिन्दा-दिली कूट-कूट कर भरी हुई हैं। जीवन और जगत के प्रति उनकी गहरी आस्था हैं। प्रबल इच्छा-शक्ति, लगनशीलता के कारण कठिन से कठिन एवं संघर्षमय परिस्थिति में भी वे उससे मुँह मोडनेवाले नहीं है।

वेशभूषा में कोहली जी को सभी प्रकार के लिबास प्रिय हैं। उनका खाना-पीना बहुत सीधा-सादा और नियमित है। जिसे सामान्यतः बचपन कहते हैं उनका बचपन वैसा कभी नहीं रहा। उन्होंने कभी किसी और के घर में लगे पौधों और वृक्षों से फूल और फल नहीं चुराये। पत्थर मारकर किसी की खिडकी के शीशे नहीं तोड़े। न कभी आपके मां को आपको खोजने के लिए पड़ोसियों के दरवाजे खटखटाने पड़े और न कभी गली-गली भटकना पड़ा। बचपन से ही आप बहुत स्वाभिमानी थे।

महेश दर्पण ने कहा है - "नरेन्द्र कोहली, यानी घनी श्वेत श्याम दाढ़ी....चश्मे के भीतर से बाहर का सबकुछ समेट लेने को आतुर आंखें.... और मित्रों में बेहद व्यावहारिक और प्रेक्टिकल व्यक्ति के रूप में चर्चित ..... यानी घर के भीतर तो एक जिम्मेदार पिता और पति है ही, बाहर भी एक बेहतर इंसान और जिम्मेदार, सामाजिक के रूप में जाना जाता है यह व्यक्ति....जो सच पूछे तो नीचे से ऊपर तक साहित्यिक है।"[16]

नरेन्द्रजी अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति हैं, जो प्रसन्न हैं तो बहुत प्रसन्न। पर यदि बात या स्थिति जरा भी मन के अनुकूल हो तो ऐसे उखड़े कि संभल ही नहीं पाते। वे पूरी तरह ईमानदार व्यक्ति है। ईमानदारी जीवन के हर क्षेत्र में है। चाहे वह लेखन हो, अध्यापन या

पारिवारिक सामाजिक संबंध। इनके व्यक्तित्व का सबसे बड़ा पहलू यह है कि, अत्यंत व्यस्तता के बावजूद भी यह सबके लिए सहज सुलभ बने रहते हैं। बाहर से बेहद हंसमुख, विनोदी और जिंदादिल यह व्यक्ति भीतर से बहुत गंभीर है। हर समय हर स्थिति के प्रति अतिरिक्त गंभीरता कभी-कभी दिमाग के लिए बहुत भारी पड़ती है। उसकी आंच में ये स्वयं तो तपते ही हैं, परिवार पर भी उसके ताप की झुलस पहुँचती है। मधुरिमा कोहली जी ने उनके बारे में कहा है - "आज जिस नरेन्द्र को मैं जानती हूँ वह मुख्य रूप से एक लेखक है। उसके व्यक्तित्व के शेष आयाम कहीं पीछे छूट गए हैं। सारे जीवन को लेखन कुछ ऐसे आच्छादित किए हुए है कि पति, पिता, पुत्र, परिचित - सभी रूपों में मात्र एक लेखक हावी हो जाता है।"[17] अपराजित जीवन शक्ति ही कोहली को वह प्रखरता देती है, जिसके कारण आपका व्यक्तित्व गहरे मानो में दिलचस्प हो जाता है।

9) कृतित्व :

नरेन्द्र कोहली जी की बहन जब कॉलेज में पहुंच गयी तब वह हिन्दी साहित्य पढ़ रही थी। उन्ही के प्रभाव के कारण कोहली जी ने हिन्दी साहित्य पढ़कर लेखक बनने का निश्चय कर लिया। और आप लेखक बन ही गए।

विद्यार्थी जीवन से ही कोहली की अनेकों कहानियाँ, उर्दू हिन्दी कवितायें विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थी, जो साहित्यिक दृष्टि से उच्च कोटी की थी। उन्होंने थोड़ी बहुत हर वर्ग पर अपनी लेखनी की रोशनी फेंकी है, पर "निम्न मध्यवर्ग" ही उनकी रचना का मूल उत्स रहा है। उपन्यास हो या कहानी, व्यंग्य हो या नाटक, आत्मपरक सर्जनात्मक निबंध हो या बालसाहित्य समूचा कोहली साहित्य "निम्न मध्यवर्ग" के चित्रण से भरा पड़ा है। "यह ऐसा जटिल वर्ग है, जिसके हर सदस्य की गाँठ अलग-अलग दिखायी देती हैं। यह ऐसा वर्ग है, जैसे पारा, जिसे स्थिर करके परखना भी कठिन हो। यह एक ऐसा बेतुका वर्ग है, जिसका कोई नैतिक स्तर नहीं, एक व्यवसाय नहीं, एक जीवन नहीं, एक आचरण नहीं।"[18]

कोहली जी जब आठवीं कक्षा में थे उसी वक्त उन्होंने एक कहानी "हिंदोस्तॉं : जनता निशां" उर्दू में लिखी थी, जो स्कूल की मुद्रित पत्रिका में छपी थी। "नरेन्द्र जी ने आई.ए. की परीक्षा दी ही थी कि, "सरिता" में "नये अंकुर" के अन्तर्गत एक कहानी "पानी का जग, गिलास और केतली" छपी। और फरवरी 1960 की "कहानी" में "दो हाथ" छपी जिसे अकसर उन्होंने अपनी पहली प्रकाशित कहानी माना है।"[19]

"1966 में नरेन्द्र जी का एम.ए. का शोध-निबंध प्रकाशित हुआ था - प्रेमचंद के साहित्य सिध्दांत"। 1967 ई. में "उमेश प्रकाशन" से कुछ प्रसिध्द कहानियों के विषय में प्रकाशित हुआ। 1969 में पहला कहानी संग्रह "परिणति" प्रकाशित हुआ।"[20] अगली पुस्तक "एक और लाल तिकोन सन 1970 में नेशनलवालों ने स्वयं ही प्रकाशित की। 1972 ई. में "पांच एब्सर्ड उपन्यास" प्रकाशित हुई। यह "हिमाचल विश्वविद्यालय" में बी.ए. के पाठयक्रम में थी।"[21]

उन्ही दिनों नरेन्द्र जी उपन्यास-लेखन की ओर प्रवृत्त हो गए। उपन्यास लेखन के प्रयत्न वे कई बार कर चुके थे। "आपने "सूर्य ढलता गया..." कहानी को "मेरा अपना संसार" और "अंधेरे का जीवन" कहानी को "अब" नामक लघु उपन्यासों में ढालने का प्रयत्न किया।"[22] इन प्रयत्नों के पीछे विधागत आवश्यकता नहीं थी, यह मात्र उनकी उपन्यासकार बनने की यशलिप्सा ही थी। "साथ सहा गया दु:ख" का प्रथम प्रारूप उपन्यास के रूप में ही लिखा गया था, किन्तु वह भी उपन्यास बन नहीं पाया। ऐसे ही "आश्रितों का विद्रोह" भी एक लंबी फंतासी बनकर रह गया। 14 जून 1970 ई. के दिन आपका पहला उपन्यास "पुनरारंभ" पूरा हुआ। उसके बाद आपने "आतंक" उपन्यास लिखा। "आतंक" 17 जुलाई 1971 को पूरा हुआ।

"इसी बीच में "साथ सहा गया दु:ख" और "आश्रितों का विद्रोह" उपन्यास भी पूरे हुए। उनकी पांडुलिपियाँ क्रमशः 13 अक्तूबर 1971 और 26 दिसंबर 1971 ई. को पूरी हुई। 20 अप्रैल 1974 को "दीक्षा" पूर्ण हुई। यह उपन्यास 1975 के दिसंबर के अंत में प्रकाशित हो सका। अगले तीनों उपन्यास "अवसर", "संघर्ष की ओर" और "युध्द" 1979 ई. तक पराग प्रकाशन से ही प्रकाशित हुए। दिसंबर 1981 में "अभिज्ञान" यह उपन्यास प्रकाशित हुआ।"[23]

(11 जनवरी 1982 ई.)

10) पुरस्कार :

कोहली जी चौथी कक्षा में "न्यू मिडिल स्कूल" में अपनी कक्षा में प्रथम आए थे। वे कक्षा के मॉनीटर भी बने। सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि, शनिवार के पहले पीरियड में होनेवाले वादविवाद में उनकी धाक जम जाती थी। "छठी कक्षा में "एज्युकेशन वीक" के अवसर पर सारे मिडिल स्कूलों की उर्दू वादविवाद प्रतियोगिता में प्रथम रहा था। उसमें उन्हें एक मेडल मिला था, जिसे वे बहुत दिनों तक अपनी कमीज पर टाँगा करते थे।"[24] आठवी से ग्यारहवी तक चारों वर्षों में "एज्युकेशन वीक" में आप वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आए थे। पहले उर्दू में, फिर हिंदी में। बिहार को बच्चों की संस्था "किशोर दल" की प्रतियोगिता में पहले पुरूलिया में और फिर छपरा में

उर्दू में प्रथम, लड़कों में प्रथम और सर्वश्रेष्ठ वक्ता के पुरस्कार जीते थे। कालेज में होनेवाली अनेक प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त बिहार विश्वविद्यालय की ओर से हिंदी और उर्दू की प्रतियोगिताओं में भाग लिया और कुछ पुरस्कार भी जीतें। आप कक्षा में प्रथम आते थे और भाषण प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीतते थे, इसलिए बाहर पटरी पर फल बेचने और आऊट हाऊस में रहने के बावजूद स्वयं को किसी से हीन नहीं मानते थे। "फलैट में रहनेवाले बच्चों से आपका झगड़ा होता था, क्योंकि आप अफसरों के बच्चे थे, अंग्रेजी स्कूलो में पढ़ते थे और फलैटों में रहते थे। पर फलैटों में रहनेवाला प्रभाकर आपका मित्र था। खेलने के नाम पर वे गुल्ली-डंडे से लेकर क्रिकेट, फुटबाल और वॉलीबॉल.... सब कुछ खेलते थे, पर आप कभी अच्छा खिलाड़ी नहीं थे। आपका रिकॉर्ड है कि, आप जीवन भर कभी किसी खेल में कोई पुरस्कार नहीं जीता।"[25]

नाटक में अभिनय की लत जुड़ गयी। यह अवधि एक नशे की-सी थी। लड़के-लड़कियों का साथ पढ़ना, कहानियाँ और कवितायें लिखना, प्रतियोगिताओं में जाना, अभिनय करना, और पुरस्कार जीतना बस् इतना ही आपका ध्येय था। दिल्ली में उन्हें उपेक्षा मिली। प्रत्येक व्यक्ति ने हीन सिध्द करने का प्रयत्न किया। "पढ़ाई में, वाद-विवाद प्रतियोगिता में, साहित्य में, धन, पद और सामाजिक सम्मान में। पर यह स्थिति अधिक देर चली नहीं। वाद-विवाद तो उन्होंने नष्ट होने के भय से स्वयं ही छोड़ दिया।"[26] रामजस कॉलेज की पत्रिका का छात्र सम्पादक वे बन गए। होस्टल यूनियन के वे सेक्रेटरी थे। कालेज के नाटक का नायक भी वे ही थे। "सारिका" में मोहन राकेश के सम्पादन में "होनेवाली पत्नी" कहानी छप गई। और इतना सब करते हुए भी वे अपने कालेज में प्रथम आ गए। 1966 में उनका एम.ए. का शोध-निबंध प्रकाशित हुआ था। "प्रेमचंद के साहित्य सिध्दांत।" आपकी रायल्टी के रूप में प्रकाशक ने आपको सौ प्रतियाँ दी थी।

11) साहित्य सृजन :

आधुनिक हिन्दी साहित्य में श्री नरेन्द्र कोहली का साहित्य महत्वपूर्ण माना जाता है। आपका नाम विविध साहित्यिक विधाओं के क्षेत्र में अपनी रचनात्मक देन के लिए विशिष्टता रखता हैं। श्री नरेन्द्र कोहली सर्वतोन्मुखी, प्रतिभावान, लब्ध प्रतिष्ठित कहानीकार, प्रख्यात व्यंग्यकार एवं रंगमंचीय दृष्टि से सफल नाटककार के रूप में बहुश्रुत हैं।

कारयत्री प्रतिभा उन्हें जन्मजात प्राप्त हुई थी। एक साहित्यिक के रूप में भी अपना परिचय साहित्य के विभिन्न अंगों का लेखन कर हिन्दी जगत को दिया। साहित्य की शायद ही ऐसी कोई विधा हो, जहाँ आपकी लेखनी का प्रवाह निर्बाध गति से न चला हो। आपने लेखन कार्य

उर्दू से प्रारम्भ किया था। परन्तु कुछ समय बाद हिन्दी लेखन प्रारम्भ किया, जो इतना प्रबल हो गया कि, आज तक हिन्दी जगत को आपने अनेको ग्रन्थ प्रदान किये। कोहली के सृजनात्मक साहित्य में उपन्यास, कहानी संग्रह, व्यंग्य, नाटक, आत्मपरक सर्जनात्मक निबंध, बाल-साहित्य, शोध आलोचना आदि के रूप में बहुसंख्यक कृतियाँ उपलब्ध होती हैं।

उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली -

श्री नरेन्द्र कोहली के उपन्यास इस प्रकार हैं -

1. पुनरारंभ
2. आतंक
3. साथ सहा गया दुःख
4. मेरा अपना संसार
5. दीक्षा
6. अवसर
7. जंगल की कहानी
8. संघर्ष की ओर
9. युध्द
10. अभिज्ञान
11. आत्मदान

कोहली के प्रत्येक औपन्यासिक कृति का युग चेतना के प्रतिनिधित्व की दृष्टि से महत्व हैं।

"पुनरारंभ" में उन्नीसवी शताब्दी के प्रथम चरण में पंजाब के जन-जीवन का चित्रण किया हैं, जिसमें नायिका अपने पति से बार-बार प्रताड़ित होकर अपने संकल्प के आधार पर अपनी संतान के पालन-पोषण के सहारे अपने जीवन का पुनरारम्भ करती हैं। "आतंक" में तीन परिवारों की कथा के माध्यम से परिवेश में फैले व्यापक आतंक का निर्भीक चित्रण लिखा हैं। कोहली की मान्यता है कि, इस सारे आतंक का मूल राजनीति में ही हैं।"[27] राजनीति के कारण ही आतंक का निर्माण हो चुका है। "आतंक" यह उपन्यास राजनीतिक और सामाजिक सत्य प्रस्तुत करनेवाला सशक्त उपन्यास हैं। "साथ सहा गया दुःख" एक नव-दंपति के महानगरीय जीवन का चित्रण करता हैं। सामाजिक और आर्थिक संघर्षों के बीच में से गुजरती हुई कथा के माध्यम से लेखक पति-पत्नी के संबंधों को संघर्ष से उतारकर तादात्मय के धरातल पर लाता हैं।"[28] विवाह विच्छेद की वकालत के इस युग में, लेखक ने यह स्थापित किया है कि, एक साथ सहा गया दुःख उस दंपति के जीवन

भर के तादात्म्य का आधार बन जाता है। "साथ सहा गया दुःख" यह साधारण दांपत्य जीवन का एक मर्मस्पर्शी उपन्यास है। "मेरा अपना संसार" दो लघु उपन्यासों का संकलन है। व्यक्तिगत और सामाजिक-आर्थिक असफलताओं के बीच जीनेवाले दो नारी पात्रों की मार्मिक कहानियाँ हैं। जिनमें से एक क्रमशः भावात्मक आत्महत्या की ओर बढ़ती है तो दूसरी सामाजिक अपराध की ओर आकर्षित होती है। "दीक्षा" में लेखक ने घटनाओं की दृष्टि से विश्वामित्र के सिध्दाश्रम में राक्षसों के उत्पात से लेकर राम के विवाह और परशुराम की पराजय तक की कथा का सुंदर वर्णन किया है।"[29] लेखक ने स्पष्ट किया है कि, इस विशाल जंबूद्वीप में हो रहे राक्षसी उत्पात और उसके परिणामस्वरूप सद्मूल्यों के हनन और राक्षसी मूल्यों के भयावने आतंक के विस्तार को देखने और उसका प्रतिरोध करने की दीक्षा कृषि विश्वामित्र ने राम को दी थी। इस कथा के विभिन्न प्रसंगों में से गुजरते हुए लेखक विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं, जन-सामान्य के शोषण, बुध्दिजीवियों के कर्तव्य, समाज में नारी का स्थान, स्त्री-पुरूष संबंध, जाति और वर्ण की विभिषिकाओं, लोलुप और स्वार्थी बुध्दिजीवियों, शासनाधिकारियों इत्यादि विषयों का अत्यन्त क्रांतिकारी विश्लेषण करता है। "अपनी मान्यताओं के सहारे एक प्रख्यात कथा को पूर्णतः मौलिक तथा आधुनिक उपन्यास के रूप में परिणत कर देता है। "अवसर" में रामकथा के अयोध्या-कांड की कथा पर आधृत पौराणिक उपन्यास, जिसमें आधुनिक परिप्रेक्ष्य और मूल्य-मानकों के आधार पर उस प्राचीन कथा के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है।"[30] "जंगल की कहानी" आज से पचास वर्ष पूर्व के पंजाब के उस क्षेत्र की कथा है, जहां चारों ओर वन और पर्वत थे। मनुष्य की वन्य-वृत्तियों के साथ-साथ शासन का "जंगल का कानून" भी यहां मार्मिकता से चित्रित हुआ है। "संघर्ष की ओर" रामकथा के अरण्य-कांड पर आधारित पौराणिक उपन्यास है। इस उपन्यास में आदिवासी जातियों के उत्थान, उनके शोषण के विभिन्न आयामों और शोषण के विरूध्द जन-संगठन की समस्याओं का औपन्यासिक कलात्मक चित्रण किया है। "युध्द" रामकथा के किष्किंधा, सुन्दर और लंका कांड के आधार पर दो जिल्दों में लिखा गया बृहत् पौराणिक उपन्यास है। "अभिज्ञान" सुदामा और कृष्ण की प्रख्यात कथा पर आधारित पौराणिक-दार्शनिक उपन्यास है। उसमें श्रीमद्भगवत् गीता के कर्म-सिध्दांत की नयी, रोचक और औपन्यासिक व्याख्या की गई है।"[31] "आत्मदान" सम्राट हर्षवर्धन के बड़े भाई राज्यवर्धन के जीवन पर आधारित एक अनोखा और रोचक उपन्यास है। इसमें राज्यवर्धन के चरित्र के नये आयाम चित्रित किए हैं।

इस प्रकार हम कह सकते है कि, कोहली की औपन्यासिक कृतियों का महत्व भी

वस्तु, शिल्प, मौलिकता और वर्गीय चेतना की उत्कृष्टता की दृष्टि से आधुनिक हिन्दी उपन्यास के इतिहास में प्रवर्तक कृतियों के रूप में ऊँचे स्थान पर हैं।

कहानीकार कोहली :

कोहली ने अपनी कहानियों में समाज और व्यक्ति दोनों का चित्रण किया हैं। समाज के चित्रण में आपका दृष्टिकोण सर्वत्र आलोचनात्मक रहा है और व्यक्ति के चित्रण में भी। उनकी कहानियों की विषय वस्तु सामाजिक जीवन की अनेकरूपता तथा व्यक्ति की मनःस्थिति रही हैं।

कोहली जी के निम्नलिखित कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं :

1. परिणति (1969)
2. कहानी का अभाव (1977)
3. दृष्टिदेश में एकाएक (1979)
4. शटल (1982)
5. नमक का कैदी (1983)
6. निचले फलैट में (1984)
7. नरेन्द्र कोहली की कहानियां (1984)
8. संचित भूख (1985)

"परिणति" यह उनका आरंभ के दस वर्षों के लेखन से चुनी हुई कहानियों का पहला संग्रह हैं। जीवन के झूठ और रोमांस को तीखी कलम से छील-छीलकर यथार्थ जीवन को उकेरनेवाली कहानियाँ इसमें संग्रहित है।"[32] "कहानी का अभाव" यह "संपूर्ण कहानियाँ" श्रृंखला का पहला खण्ड है। कोहली की आरंभिक कहानियाँ, जिनमें किशोर-मन के प्रति खुलता हुआ संसार बहुत रोचक ढंग से चित्रित हुआ है। "कहानी का अभाव" कहानी की विधा संबंधी पूर्व-मान्यताओं को सशक्त चुनौती देती है। "दृष्टिदेश में एकाएक" यह "संपूर्ण कहानियाँ" श्रृंखला का दूसरा खंड हैं।"[33] पारिवारिक और सामाजिक परिवेश का एक युवा दृष्टि द्वारा मर्मभेदी बेबाक विश्लेषण इस कहानी संग्रह में किया गया हैं। इसमें महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि, इस युवा लेखक ने अपनी पिछली पीढ़ी को भी इन कहानियों में भरपूर सहानुभूति दी हैं। "शटल" यह "संपूर्ण कहानियाँ" श्रृंखला का तीसरा खंड हैं। इसमें कोहली जी ने कुछ प्रौढ़ कहानियों का महत्वपूर्ण संकलन किया हैं। "नमक का कैदी", "संपूर्ण कहानियाँ" श्रृंखला का चौथा खंड हैं।"[34] 1967-68 के दौरान लिखी गई कुछ महत्वपूर्ण कहानियों का संकलन हैं। "निचले फलैट में" यह "संपूर्ण

कहानियां" श्रृंखला का पांचवा खंड है। इसमें 1969 और 1970 के दौरान लिखी गई कहानियां हैं। समाज में बढ़ती हुई अमानवीयता के स्पष्ट चित्र और उपन्यास तत्व की वृध्दि का चित्रण इसमें किया गया है।"[35] नरेन्द्र कोहली की कहानियां पेपरबैंक में पहला कहानीसंग्रह हैं। छह लंबी और औपन्यासिक कहानियों का पठनीय और आकर्षक संकलन है। "संचित भूख" में 1969 और 1975 के बीच लिखी गई कहानियां हैं। इन कहानियों में जन-सामान्य के मनोविज्ञान के साथ-साथ प्रशासन की क्रूरता, परिस्थितियों द्वारा प्रताड़ित लोगों की असहायता का प्रमुख रूप से चित्रण किया हैं।"[36]

नरेन्द्र कोहली जी के उपर्युक्त सभी कहानी संग्रह को "समग्र कहानियाँ" (1991) में समाहित किया हैं। इसमें अब तक की प्रकाशित सभी कहानियों का सम्पूर्ण संकलन चित्रित किया गया हैं।

व्यंग्यकार नरेन्द्र कोहली :

व्यंग्यकार नरेन्द्र कोहली के निम्नलिखीत व्यंग्य रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

1. एक और लाल तिकोन
2. पांच एब्सर्ड उपन्यास
3. आश्रितों का विद्रोह
4. जगाने का अपराध
5. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ
6. आधुनिक लड़की की पीड़ा
7. त्रासदियां

"कोहली का "एक और लाल तिकोन" हास्य-व्यंग्य के निबंधों का पहला संकलन हैं। इसमें कथा तत्व भी पर्याप्त मात्रा में वर्तमान हैं।"[37] " "पांच एब्सर्ड उपन्यास" में व्यंग्य लेखन का सर्वथा नया और मौलिक प्रयोग किया गया हैं। इसमें कार्टून-शैली में लिखी गई औपन्यासिक विधा की रचनाएं हैं। "आश्रितों का विद्रोह" में महानगर दिल्ली के सामान्य जन की अपनी आवश्यकताओं का चित्रण किया हैं।"[38] राशन, दूध, यातायात इत्यादि के लिए जूझने की एक फंतासीय कथा हैं। सरकार का आश्रित जन-सामान्य सरकारी व्यवस्था के बहिष्कार द्वारा अपना विद्रोह जताता है, किन्तु राजनीति उसे पुनः शासन-तंत्र पर आश्रित बना देती हैं। यह एक व्यंग्य उपन्यास हैं।" "जगाने का अपराध" व्यंग्य रचनाओं का तीसरा संकलन हैं। इस संकलन में आकर व्यंग्य तीखा और धारदार हो गया हैं। इसमें सामाजिक चेतना कुछ अधिक उभरकर आयी है। "मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ" श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाओं के संकलन के साथ लेखक की व्यंग्य संबंधी एक विस्तृत भूमिका हैं।"[39] व्यंग्य लेखन की प्रवृत्ति, सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियां, व्यंग्य के स्वरूप तथा व्यंग्य-विधा पर लेखक

के मौलिक स्वानुभूत विचार किया गया है। इसमें व्यंग्य के शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण सामग्री है।

" "आधुनिक लड़की की पीड़ा" यह लेखक का व्यंग्य रचनाओं का चौथा संकलन है। नये विषयों पर तीव्र व्यंग्यात्मक शैली में अपने समसामयिक समाज का विश्लेषण किया गया है। "त्रासदियां" यह व्यंग्य रचनाओं का पाँचवा संकलन है। इसमें व्यंग्य के साथ-साथ विनोद की ओर विशेष झुकाव है।"[40]

"नरेन्द्र कोहली के सृजन में कथा तथा व्यंग्य दोनों का ही संयोग है। उनकी आरंभिक कहानियों में भी व्यंग्य की झलक देखी जा सकती है। उनका शिल्प चाहे निबंध का हो, संस्मरण का हो, आत्मकथा का हो उनकी व्यंग्य रचनाओं में मौलिक प्रयोगों का अपना महत्व है।"[41]

नाटककार कोहली :

कोहली जी के निम्नलिखित नाटक प्रकाशित हो चुके हैं :

1. शम्बूक की हत्या
2. निर्णय रूका हुआ
3. हत्यारे
4. नींद आने तक
5. गारे की दीवार

" "शम्बूक की हत्या" यह कोहली जी का पौराणिक प्रसंग पर आधारित आधुनिक जीवन संबंधी व्यंग्य-नाटक है। इसमें राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को उधेड़कर उसमें बहुत गहरे दृष्टि से झांका गया है।"[42] यह उनका प्रथम नाटक है। "1975 में प्रकाशित हुआ था। अब तक यह नाटक देश में अनेक बार अनेक स्थानों पर अभिनीत किया जा चुका है।"[43] "निर्णय रूका हुआ" यह राजनीति, प्रशासन और न्यायपालिका के बीच घिरे और धन के अभाव तथा आकांक्षाओं के बाहुल्य से प्रताड़ित समाज की कहानी है। भ्रष्टाचार के राक्षस का रोम-रोम इसमें उदघाटित किया गया है। यह पाठक में स्फूर्ति जगाता एक पूर्ण और सहज-मंचीय नाटक है। "हत्यारे" यह कोहली जी का तीसरा नाटक है। यह 1983 में "रविवार" के चार अंकों में (धारावाहिक) प्रकाशित हुआ था। नाटक प्रयोगशील नहीं है, सीधे-सादे ढंग से नाटककार द्वारा यथार्थवादी शैली में एक मध्यवर्गीय परिवार का मनोवैज्ञानिक खाका खींचा गया है।"[44] घर और घर के बाहर, समाज और प्रशासन में छिपे हत्यरों के कृत्यों को उदघाटित करता एक प्रखर व्यंग्यात्मक

नाटक है। "एक साधारणसी घटना को प्रत्येक अगली पंक्ति के साथ नाटककार असाधारण और गंभीर घटना में बदलता चलता है। सहज मंचनीय, गहरी पकड़वाला नाटक है। "नींद आने तक" में भी कोहली जी ने व्यंग्य कसकर भरा है। "गारे की दीवार" मध्यवर्ग की आडंबरप्रियता, ईर्ष्या और अहंकार का चित्रण करनेवाली कृति हैं। जो अंततः उनके जीवन को अपराध के विष से भरता जा रहा है।"[45]

"नरेन्द्र कोहली के नाटककार का एक क्रमिक विकास इन नाटकों में हैं। जहाँ "शम्बूक की हत्या" पाठक का नाटक है, "निर्णय रूका हुआ" नाटककार का नाटक है और "हत्यारे" निर्देशक का नाटक है। कोहलीजी की रंगचेतना का यह विकास पूरी सम्भावना देता है कि, भविष्य में उनके द्वारा लिखे जाने वाले नाटक अत्यंत प्रभावशाली सिध्द होंगे।"[46]

कोहली जी की अन्य रचनाएँ :

कोहली जी ने आत्मपरक सर्जनात्मक निबंध भी लिखे है। जिसका नाम है "नेपथ्य" इसमें उन्होंने अपनी रचना प्रक्रिया, व्यक्तित्व और संबंधों के विषय में लेखक के ईमानदार, बेबाक, सर्जनात्मक निबंध, जो उतने ही रोचक है,जितनी कोई कथा-कृति हो सकती है। उन्होंने बाल-साहित्य पर भी प्रकाश डाला है। "गणित का प्रश्न" और "आसान रास्ता" यह उनके बाल साहित्य का नाम हैं। "गणित का प्रश्न" में बच्चों के लिए आधुनिक ढंग की नई कहानियां, जो उनके अपने जीवन से ही ली गई हैं। "आसान रास्ता" किशोरों के लिए दस आकर्षक कहानियों का संकलन इसमें किया गया हैं। "कोहली जी ने शोध आलोचनाओं की भी निर्मिति की है उसके नाम है -

1. प्रेमचंद के साहित्य सिध्दांत
2. कुछ प्रसिध्द कहानियों के विषय में
3. प्रेमचंद
4. हिन्दी उपन्यास : सृजन और सिध्दांत।"[47]

"प्रेमचंद के साहित्य सिध्दान्त" में भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में प्रेमचन्द के रचना-संसार का प्रथम बार सैध्दान्तिक विवेचन किया हैं। अनेक नई और मौलिक स्थापनाएँ की है। प्रेमचन्द के साहित्य को समझने के लिए नई दृष्टि प्रदान की है।"[48] कुछ प्रसिध्द कहानियों के विषय में कोहली जी ने हिन्दी की कुछ प्रसिध्द कहानियों की मौलिक तथा सर्जनात्मक आलोचना की है। "प्रेमचंद" इस आलोचना परक निबंध में कोहली ने प्रेमचन्द पर तीन महत्वपूर्ण निबंध लिखे है जो आलोचना से अधिक सर्जनात्मक साहित्य का अंग प्रतीत होते हैं। इसमें निम्न लिखित संकलित निबंध है -

"1. प्रेमचंद का महत्व

2. प्रेमचंद और जनक्रांति

3. प्रेमचंद के साहित्य।"[49]

इस प्रकार नरेन्द्र कोहली को आज के युग के जानेमाने कथाकार, निबंधकार, नाटककार, व्यंग्यकार और साहित्य के गंभीर अध्येता माना जाता है।

निष्कर्ष :

नरेन्द्र कोहली आज के युग के सशक्त हस्ताक्षर है। आपने कहानियां और कविताएँ प्रायः साथ-साथ ही लिखनी आरंभ की। बीच-बीच में कुछ ऐसे कालखंड भी आए जब दोनों में से एक विधा पीछे छूटने लगी। कॉलेज के आरंभिक दो वर्षो में कवि-रूप कुछ अधिक मुखर हो उठा था। सैंकड़ो की संख्या में कविताएं लिखी थी और कॉलेज में हुए कवि सम्मेलनों में सुनाई भी थी। 1960 ई. से कहानियाँ छपने का क्रम बहुत नियमित हो उठा था। इतना कि, आपने कविताएं लिखनी प्रायः छोड़ दी। आप कविताएँ संभवतः अपने किशोर मन की रोमानी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए लिखी थी। उनमें से अट्ठानबे प्रतिशत कविताएं प्रेम कविताएं थी। नारी के सौन्दर्य और पुरूष के प्रेम की कविताएं दो प्रतिशत कविताएं व्यंग्य कविताएं थी। उनका व्यक्तित्व उनके चिंतन और व्यवहार में खासा रोमांस विरोधी है। कदाचित यही कारण है कि, उनकी कविताएं चल नही पायी। कहानियों के साथ कुछ हल्के-फुल्के व्यंग्य भी वे लिखते रहें। कुछ पुराने परिहासात्मक निबंध लिखे थे। किंतु आरंभिक कहानियों में भी व्यंग्यात्मक स्थितियां पर्याप्त मात्रा में हैं। वस्तुतः आरंभिक कहानियां अपने परिवार तथा अपने कॉलेज की घटनाओं तथा पात्रों पर आधारित हैं। कोहली जी प्रेम के विरोधी नहीं है, किंतु उसके साथ जुड़ी अतिरिक्त भावुकता को आप कभी सह नही सकते।

नरेन्द्र कोहली घर के भीतर जो जिम्मेदार पिता और पति हैं ही, बाहर भी एक बेहतर इंसान और जिम्मेदार, सामाजिक के रूप में जाने जाते हैं। वे नीचे से ऊपर तक साहित्यिक है। आप अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति है। आप अपने लेखन कार्य, अध्यापन, पारिवारिक संबंध, हर क्षेत्र में ईमानदार हैं।

व्यंग्यकार और उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली का साहित्य में प्रवेश कहानी के माध्यम से हुआ था। आप भारतीय अस्मिता और भारतीय संस्कृति से गहरा लगाव रखनेवाले आधुनिक लेखक है। जिनका साहित्यविषयक उद्देश्य स्पष्ट है। वह उद्देश्य है पाठकों को अपनी सांस्कृतिक

धरोहर से परिचित करना, संस्कारों के धरातल पर जीवन के विवेक और कर्तव्यबोध से संपृक्त कराना।

नरेन्द्र जी का जन्म उनके दादा के घर में हुआ। उनके दादा पंजाब के वन-विभाग में हेडक्लर्क थे। होश संभालने पर जो तथ्य नरेन्द्र जी को मालूम हुआ, उसके आधार पर ज्ञात हुआ कि, पैतृक मकान का दादा का हिस्सा आपके बड़े भाई ने हड़प लिया था। उस हिस्से को लेकर दादा के भाइयों में जो झगड़ा हुआ था, वह आपके जीवन के अन्त तक चलता रहा। दादा के देहांत पर भी उनके भाई नहीं आये थे। दादा का नाम हरकिशनदास और दादी का नाम भाइयादेई था। छोटी दादी उनकी सौतेली दादी का नाम दुर्गादेवी था।

नरेन्द्र जी के पिता-परमानन्द कोहली की आँखो में बचपन से कुकरे थे। दृष्टि दोषपूर्ण होने के कारण वे सातवीं आठवीं से आगे नहीं पढ़ सके। दादा ने उन्हें स्यालकोट में पुस्तकों और पत्रिकाओं की एक दुकान खोल दी थी। किन्तु वे दुकानदार नहीं, साहित्यकार बनना चाहते थे। उन्होंने दो-एक कहानियां भी लिखी थी, जो किसी दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित हुई थी। किंतु न वे साहित्यकार बन सके और न दुकानदार।

कोहली का शैशव कभी भी नटखट और खिलंडरे बच्चों का शैशव नहीं रहा। आरम्भ में आप काफी बीमार और रोना बच्चा थे। शरीर पर फोड़े-फुन्सिया भी बहुत थी। अधिकांशतः माँ से ही चिपका रहते थे। शक्ति की कमी रही होगी, पर ऊर्जा की कमी नहीं थी, क्योंकि वे अपने ढंग से सदा ही अधिक काम करनेवाले प्रसिध्द रहे है। आपके सबसे बड़े भाई सोमदेव को उनकी सौतेली दादी ने गोद ले रखा था। उन्हे नरेन्द्र जी आज भी उसी रिश्ते से चाचाजी पुकारते हैं। वे दादा-दादी के पास स्यालकोट में ही रहते हैं। जाने किन कारणों से उनके दूसरे भाई सुदर्शन और एकमात्र बहन विमला भी दादा-दादी के पास ही रहते थे। लाहौर में अपनी माँ और पिताजी के साथ नरेन्द्र जी, उनसे बड़ा भाई भूषण और उनका छोटा भाई रवीन्द्र रहते थे।

1966 में नरेन्द्र जी का एम.ए. का शोध-प्रबंध प्रकाशित हुआ था - "प्रेमचंद के साहित्य सिध्दांत"। 1967 ई. में "उमेश प्रकाशन" से "कुछ प्रसिध्द कहानियों के विषय में" प्रकाशित हुआ। आपके कहानी संग्रह आधुनिक युग की सूच्याग्र लेखनी से लिखे हुए हैं। आप आज के युग के गंभीर अध्येता है। आपको भारतीय अस्मिता और संस्कृति से गहरा लगाव है। आपने अपने व्यक्तिगत जीवन में जो देखा, सुना, भुगता, अनुभव किया सबको अपने लेखन का अंग बना दिया। आप एक महान हस्ताक्षर है। आपकी भाषा शैली सरल हैं। आप बचपन से ही अध्ययन में

रूचि रखते हैं। बचपन में भी आपने अनेक पुरस्कार जिते है। वे साठोत्तरी पीढ़ी के सुपरिचित लेखक है। मीरा सीकरी ने कहा है "कोहली ने अपनी कहानियों में लेखक रिश्तों में आये अवमूल्यन अथवा मूल्यहीनता पर केवल व्यंग्य ही नहीं करता बल्कि संवेदना के धरातल पर पात्रों की मानसिकता की कहानियों में जीता है अति संक्षिप्त ढंग से इसे "मानवीय संवेदना का गहन रचना-संसार" कहा जाता है।"[50]

संदर्भ

1)	आत्मकथ्य - कुछ नरेन्द्र कोहली के विषय में -	पृ.1
2)	वही	पृ.1
3)	वही	पृ.2
4)	वही	पृ.3
5)	वही	पृ.3
6)	वही	पृ.12
7)	वही	पृ.7
8)	वही	पृ.7
9)	वही	पृ.8
10)	वही	पृ.5
11)	वही	पृ.4
12)	वही	पृ.13
13)	वही	पृ.8
14)	वही	पृ.8
15)	वही	पृ.8
16)	उपाध्याय नर्मदा प्रसाद - व्यक्तित्व एवं कृतित्व : नरेन्द्र कोहली	पृ.18
17)	वही	पृ.28
18)	वही	पृ.28
19)	आत्मकथ्य - कुछ, नरेन्द्र कोहली के विषय मकं	पृ.6
20)	वही	पृ.7
21)	वही	पृ.8
22)	वही	पृ.9
23)	वही	पृ.3
24)	वही	पृ.4
25)	वही	पृ.6
26)	वही	पृ.9
27)	वही	पृ.14

28) आत्मकथ्य - कुछ, नरेन्द्र कोहली के विषय में पृ. 16

29) वही पृ. 15

30) वही पृ. 16

31) वही पृ. 17

32) वही पृ. 13

33) वही पृ. 15

34) वही पृ. 16

35) वही पृ. 17

36) वही पृ. 17

37) वही पृ. 13

38) वही पृ. 14

39) वही पृ. 15

40) वही पृ. 16

41) कोहली नरेन्द्र - समग्र व्यंग्य - भाग - 1 - प्राक्कथनसे

42) आत्मकथ्य - कुछ, नरेन्द्र कोहली के विषय में पृ. 14

43) वही पृ. 17

44) उपाध्याय नर्मदा प्रसाद - व्यक्तित्व एवं कृतित्व - नरेन्द्र कोहली पृ. 90

45) वही पृ. 97

46) आत्मकथ्य - कुछ नरेन्द्र कोहली के विषय में पृ. 18

47) उपाध्याय नर्मदाप्रसाद - व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृ. 102

48) आत्मकथ्य - कुछ नरेन्द्र कोहली के विषय में पृ. 13

49) वही पृ. 15

50) उपाध्याय नर्मदाप्रसाद - व्यक्तित्व एवं कृतित्व- नरेन्द्र कोहली पृ. 37